! चिपको आन्दोलन का शुभारम्भ !

आ गया है लाल निशान ।
लूटने वालो हो सावधान ॥
धन व धरती बटकर रहेगी ।
भूखी जनता चुप नहीं रहेगी ॥

भाइयो व बहिनों व साथियों नव जवानों और भावी सन्तानों तथा विद्यार्थियों, सावधान हो जाइये ? पूंजीवाद को खत्म करने के लिए पूंजीवादी उपनिदेश को खत्म करने के लिए हमें एक मत, एक जुट होकर एक साथ संगठित होना होगा और अपने विकास करने के लिए सरकार से माँग करनी होगी व लड़ना होगा ।

आज तक हमारे पर्वतीय क्षेत्रों को राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय पूंजीपतियों का उप निवेश बनाया गया है । यहां का कच्चामाल जो कि वन–सम्पदा के रूप में है । इसका शोषण व दोहन होता गया (लकड़ी, जड़ी–बूटी, रिंगाल, जानवरों व पक्षियों की खाल तथा कस्तूरा आदि), लेकिन अब जागरूक होने की आवश्तकता है । इसके लिए विरोध में यानि इस उप–निदेशवादी व शोषण के विरोध में हमें आज संगठित होकर लड़ना होगा और यहाँ के विकास के लिए प्रत्येक ब्लोक व क्षेत्र में वन–सम्पदा पर आधारित उत्पादित पदार्थों के कारखाने खुलवाने होगें ताकि इन पर्वतीय स्थानों का आर्थिक विकास हो सके रोजी रोटी की समस्या सुधर सके तथा यहाँ की मानव शक्ति का प्रयोग हो सके ।

इसके लिए हमें सर्व प्रथम जंगलों की बोली जो बड़े २ लौटों में लाखों रुपयों की जाती है का विरोध करना होगा तथा यहाँ के कच्चेमाल को बाहर जाने से रोकना होगा ।

कल कारखाने चलाने के लिए तकनीकी शिक्षण व प्रशिक्षण प्राप्ति के लिए तकनीकी शिक्षण संस्थानो कीस्थापना करवानी होगी । प्रत्येक नदी नाले व झरने व छोटे २ बिजली घर शीघ्र बनवाने होगें ताकि हमें कारखानों को चलाने के लिए विद्युत शक्ति पर्याप्त मात्रा में मिल सकें व सारा पर्वतीय प्रदेश व पूरा प्रदेश बिद्युत शक्ति से विकास कर सके और ठण्डे स्थानों में भी निवास आसानी से कर सके और रज्जु मार्ग की सैर कर सके ।

जोशीमठ ब्लोक में बड़े-२ ७० (सहत्तर) नाले व ५ नदियां हैं जहां विद्युत उत्पादन केन्द्र स्थापित किए जा सकते हैं, इस प्रकार पूरी चमोली के या पूरे पर्वतीय स्थानों के वन-सम्पदा व पानी का उपयोग हो सकेगा ।

भाइयों जोशीमठ ब्लोक यानि क्षेत्र में एक जंगल रेंणीपेंग नाम से है जो देवदार, सुरई, रांगा (फर) घुनेर आदि का है । इसको सरकार ने ५ लाख के रकम में देहरादून टाउन हौल में एक ही पूंजीपति ठेकेदार को नीलाम कर दे दिया है । इस प्रकार सरकार ने यहाँ की भूखी जनता के सामने आए हुए भोजन की थाली बड़े पूंजीपतियों को दे दी है, जो बिल्कुल अन्याय हैं । इस प्रकार सरकार की नीति बडे २ पूँजीपतियों का पोषण करने का है । गरीब जनता को तड़फाते देखना है ।

उदाहरण के लिए इन तिब्बत व्यापारियों को ही लीजिये जिनका व्यापार छीन लिया गया है व निवास स्थान रक्षा व्यवस्था के लिए ले लिया गया है । क्या यह जँगल छोटे २ लौटों में बनाकर यहाँ के स्थानीय ठेकेदारों को नहीं दिया जा सकता था ? या यहीं पर जोशीमठ में पेन्सिल व माचिस फैक्ट्री लगाकर माल तैयार कर यहाँ की रोजी रोटी की समस्या हल नहीं हो सकती थी ? लेकिन नहीं इस सरकार को जो पूंजीपतियों की पोषक है शर्म नहीं आती ।

इस लिए साथियों १५ मार्च १९७४ को जोशीमठ में इसके विरोध में "चिपको आन्दोलन" शुरू कर दिया जा रहा है । आप सभी जन सेवकों व राजनैतिक नेताओं, नव जवानों व विद्यार्थियों से निवेदन हैं कि इस आन्दोलन को सफल बनाने के लिए जोशीमठ आ कर पूरा २ भाग लेकर इस क्षेत्र की प्रगति करने में सहयोग देगें ।

विनीत :

श्री रामसिंह राणा
बचनसिंह डुंगरिया व समस्त सभापति गण
विकास क्षेत्र जोशीमठ (चमोली)

निवेदक :

कामरेड गोविन्दसिंह रावत
ब्लोक प्रमुख, जोशीमठ
विकास क्षेत्र जोशीमठ (चमोली)

(केशव प्रिंटिंग प्रेस, गोपेश्वर)